IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर के सामान्य विद्यार्थियों व दिव्यांग विद्यार्थियों द्वारा ऑनलाइन लर्निंग ऐप्प के प्रयोग पर कोविड–19 महामारी के प्रभाव का अध्ययन

नीलम
शोधकर्त्री
शिक्षाशास्त्र विभाग, आर्य कन्या डिग्री कॉलेज

डॉ. श्रुति आनन्द
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र विभाग, आर्य कन्या डिग्री कॉलेज
इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज

सारांश–

शिक्षा मनुष्य के जीवन का वह आधार है जो जन्म से प्रारम्भ होती है और मृत्यु तक चलती है। शिक्षा द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास तो होता ही है साथ ही साथ यह बालक को एक सभ्य सामाजिक प्राणी भी बनाती है। शिक्षा का महत्व अतुलनीय है समय परिवर्तन के साथ शिक्षा प्रदान करने की विधियाँ, स्वरूप, उपकरण आदि में भी बदलाव हुआ और यह आवश्यक भी है। क्योंकि माना जाता है कि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है वर्तमान का यह समय आधुनिकता, तकनीकी व इलेक्ट्रानिक उपकरण का युग है जिसके कारण जीवन सरल और गतिशील हो गया है। इसी गतिशीलता और सरलता को देखते हुए भारत सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में आईसीटी को बढ़ावा भी दिया है और शिक्षा के क्षेत्र में दूरस्थ शिक्षा जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध करायी। कोविड–19 के कारण पिछले दो वर्षों से शिक्षा के प्रत्येक स्तर में ऑनलाइन शिक्षा प्रारम्भ करनी पडी जिससे परम्परागत शिक्षण की जगह ऑनलाइन शिक्षण की महत्ता बढ़ी है और आज अभिभावक व विद्यालय दोनों ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा दे रहे हैं कोविड महामारी के कारण ही सही परन्तु यह विद्यार्थियों के लिए एक सकारात्मक परिवर्तन भी है जो आने वाले कई वर्षों तक इतने व्यापक स्तर पर फैलाना सम्भव नही था। अतः विद्यालय, शिक्षकों व विद्यार्थियों ने शिक्षा के इस डिजिटल प्लेटफार्म को स्वीकार किया और कोविड महामारी को देखते हुए स्वीकार करना जरुरी भी था इसके लिए सरकार को भी इस क्षेत्र में मदद करनी चाहिए। तभी भारत इस विकट परिस्थिति में धारणीय विकास के लक्ष्य को प्राप्त कर पायेगा और विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाये रख पायेगा क्योंकि वर्तमान में ई–लर्निंग को ही भविष्य की शिक्षा माना जा रहा है। अतः यह आवश्यक है कि भारत के प्रत्येक बच्चे के सुनहरे भविष्य के लिए सभी के द्वारा ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए और व्याप्त समस्याओं को दूर करने का भी प्रयास करना चाहिए।

मुख्य बिन्दु– माध्यमिक स्तर सामान्य विद्यार्थी, दिव्यांग विद्यार्थी, ऑनलाइन लर्निंग ऐप्प, कोविड–19 महामारी।

प्रस्तावना–

वर्तमान में विश्वव्याप्त कोविड–19 महामारी के कारण न केवल मानव स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित हुआ है बल्कि मानव जीवन को भी सामाजिक, आर्थिक व मानसिक रूप से क्षति हुई है। विदित है कि कुछ दशकों से भारत ने शिक्षा जगत में समय के साथ नए–नए परिवर्तन किये जैसे कि समावेशी शिक्षा का विकास, दूरस्थ शिक्षा, आईसीटी द्वारा शिक्षा प्रदान करना व नई शिक्षा नीति 2020 द्वारा कुछ नयापन। जब भारत इस विकास के क्रम में था,तभी अचानक आई कोविड–19 महामारी के

कारण देश और दुनिया में एक ऐसा समय आया कि संक्रमण को कम करने के उद्देश्य से लॉकडाउन जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ा जिसके कारण दुनिया रुक सी गयी थी।

ऐसे में जब औपचारिक शिक्षण प्रक्रिया बाधित हुई तो विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा अपने परम्परागत तरीके को छोड़कर ऑनलाइन रूप में मोबाइल, लैपटॉप, कंप्यूटर पर आधारित हो गयी। वर्तमान समय में सभी विद्यार्थी किसी भी स्थान पर विश्व के किसी भी विषय–विशेषज्ञ द्वारा ऑनलाइन मोड से अपने अधिगम में होने वाली समस्या का समाधान सरलता व सहजता से कर सकता है। विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न संस्थानों द्वारा निर्मित लर्निंग ऐप्प का प्रयोग किया जाने लगा है, जिसके कारण विद्यार्थियों की निर्भरता भी इन लर्निंग ऐप्प पर अधिक हो गयी है।

आधुनिक समय में ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली एक वरदान की तरह है, विद्यार्थी अपने घर पर ही अपनी विद्यालयी शिक्षा को पूरी कर ले रहा है। विद्यालयी शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी यदि किसी कारणवश विद्यार्थियों को किसी विषय–बिन्दु को समझने में समस्या हो तो विद्यार्थियों के पास कई ऐसे लर्निंग ऐप्प उपलब्ध हैं जो किसी विशेष–विषय से सम्बंधित हैं, ऐसे में विद्यार्थी अपना समय व श्रम दोनों बचाते हुए मात्र उन्हीं बिन्दुओं को जिसमें विद्यार्थियों को अधिगम में समस्या है उन्ही पर ध्यान देते हुए अपनी समस्या का समाधान अधिक स्पष्ट कर ज्ञानार्जन करेगा।

ऑनलाइन शिक्षा जितनी सहज व सुविधापूर्ण सामान्य बच्चों के लिए है उतना ही दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए भी क्योंकि जो बच्चे चल फिर नहीं सकते, जिनकी दृष्टि कमजोर है, जो आंशिक रूप से बधिर है उनको विद्यालय जाने में कई प्रकार की समस्याएं होती थी जैसे कि परिवहन सम्बन्धी समस्या, जिन बच्चों को कम सुनाई देता है उनके लिए विद्यालय आने जाने में समस्या होती है, जिन बच्चों को कम दिखाई देता है उनको कक्षा में शिक्षण के दौरान ब्लैकबोर्ड पर लिखी विषयवस्तु उनको स्पष्ट व साफ दिखाई नही पड़ती है जिसका समाधान कभी हो पाता था और कभी नही हो पाता था। ऐसे में इन सब समस्याओं का समाधान ऑनलाइन शिक्षा के द्वारा अधिकांशतः हुआ है अपनी अक्षमताओं के कारण दिव्यांग बालकों को किसी न किसी पर आश्रित रहना पड़ता था ऑनलाइन शिक्षा के द्वारा यह समस्या भी दूर हो गयी।

इस प्रकार ऑनलाइन मोड से शिक्षा ग्रहण करना सामान्य विद्यार्थियों और दिव्यांग विद्यार्थियों दोनों के लिए लाभकारी ही है।

दूसरी तरफ प्रश्न यह उठता है कि जिन लर्निंग ऐप्प के द्वारा सामान्य बच्चे अपना अधिगम कर रहें हैं, अपने व्यक्तित्व, स्व–प्रत्यय व अधिगम शैली का विकास कर रहे है क्या उन्हीं लर्निंग ऐप्प का प्रयोग करके दिव्यांग बच्चे भी समान रूप से लाभान्वित हो रहे हैं ? क्या सामान्य बालक और दिव्यांग बालकों को एक ही प्रकार के लर्निंग ऐप्प के द्वारा ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करना समावेशी शिक्षा के लक्ष्य को न्याय दिलाएगा ? निःसंदेह ऑनलाइन शिक्षा सुविधाओं से सम्पन्न है बावजूद इसके इसमें कई समस्याएं भी हैं। ऑनलाइन शिक्षा तभी सार्थक होती है जब बालक स्वयं सक्रिय रहें, क्योंकि विद्यार्थियों को कक्षा–कक्ष में कहीं न कहीं शिक्षक का भय रहता था वे अनुशासन हीनता नहीं कर पाते थे और अपने अधिगम कार्य पर ज्यादा ध्यान दे पाते थे। दिव्यांग बालकों की समस्याओं को देखते हुए उन पर अधिक ध्यान दिया जाता था शिक्षक उन पर अधिक समय देता था और उनके साथ अधिक भावात्मक और मित्रता के साथ रहता था। ऑनलाइन शिक्षा के द्वारा प्रत्येक बच्चे पर विशेषकर दिव्यांग बच्चों पर इतना ध्यान दे पाना व अलग से समय निकाल पाना शिक्षकों के लिए कठिन कार्य है।

जैसा कि हमें ज्ञात है कि ऑनलाइन शिक्षा के लिए लैपटॉप, मोबाइल, इन्टरनेट आदि उपकरणों की आवश्यकता होती है। अब जो बच्चे शारीरिक, मानसिक व आर्थिक रूप से सक्षम हैं, सक्रिय हैं उनके लिए इन उपकरणों का प्रयोग करना सरल हो जाता है परन्तु जो बच्चे कोविड–19 के पहले से ही पूर्णतः भौतिक कक्षा पर निर्भर रहते थे उनके लिए इन इलेक्ट्रानिक उपकरणों का प्रयोग कर अध्ययन प्राप्त करना उतना सरल नहीं है। दिव्यांग बच्चों के लिए समस्याएं हैं कि कभी यदि इन्टरनेट के कारण शिक्षक की आवाज कम आ रही है तो जिन बच्चों को कम सुनाई देता है उनके लिए ऑनलाइन शिक्षण बहुत कठिन हो जाता है। बालक अपनी समस्याओं को उतनी सक्रियता के साथ नही रख पाते हैं जिन बच्चों को कम दिखाई देता है ऑनलाइन के माध्यम से पढ़ना उनके लिए नुकसानदायक हैं क्योंकि ऐसे बच्चे ज्यादा देर तक स्क्रीन पर देख कर नहीं पढ़ सकते हैं। दिव्यांग बच्चों को सामान्य बच्चों की अपेक्षा शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रशिक्षणयुक्त शिक्षकों की आवश्यकता होतीं है अतः ऑनलाइन शिक्षा दिव्यांग बालकों के लिए पूर्णतः सार्थक तभी होगी जब उनकी कक्षाएं प्रशिक्षणयुक्त शिक्षकों द्वारा संचालित की जायेगीं।

उपर्युक्त सन्दर्भों से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के सामान्य विद्यार्थियों व दिव्यांग विद्यार्थियों के द्वारा ऑनलाइन सेल्फ लर्निंग ऐप्प के प्रयोग में सुविधाओं के साथ–साथ समस्याएं भी हैं इनमें विद्यार्थियों की समस्याओं व अक्षमताओं को ध्यान में रखते हुए आवश्यकतानुसार परिवर्तन की जरुरत है।

गुप्ता (2019) ने अपने अध्ययन में पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का विकास करने के लिए वीडियों अर्थात ऑनलाइन द्वारा सीखना अधिक प्रभावी है।

संपसा (2015) ने अपने अध्ययन में पाया कि ऑनलाइन सोशल नेटवर्किंग साईटों पर बिताये गए समय विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का एक कारण हैं। क्योंकि अधिकतर छात्र इन साईटों का दुरुपयोग करते हैं। जिससे उनकी मानसिकता नकारात्मक रुप से प्रभावित होती है।

डिजिटल शिक्षा हेतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने अपनी रिपोर्ट में डिजिटल शिक्षा का कार्यान्वयन के तहत बताया कि शिक्षकों द्वारा ऐसी प्रस्तुतियां महत्वपूर्ण है जो पढ़ने में सरल हो, ऑनलाइन पढ़ाने के लिए स्लाईड्स बनाने में कुछ नियमों का पालन जैसे कि बुलेट पॉइंट्स (5 या उससे कम), चार्ट्स का अधिकतम उपयोग, इससे बच्चों को अधिगम में सरलता होगी। दिव्यांग बच्चों को सांकेतिक भाषा का प्रयोग कर अधिगम कराया जाय इससे उनका अधिगम के प्रति प्रोत्साहन बढ़ेगा। बच्चों द्वारा लगातार ऑनलाइन क्लास लेने से उन्हें बेचैनी, थकान, ध्यान केन्द्रित करने में परेशानी, चिड़चिड़ापन, मांसपेशियों में तनाव, अनिद्रा जैसी समस्याएं होने लगाती हैं। इसलिए आवश्यक है कि अभिभावक भी अपने बच्चों पर ध्यान दें, उनसे बातचीत करे और उनकी समस्याओं के समाधान में अपने स्तर से सहायता प्रदान करें।

ह्यूमन राइट्स वाच ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि सरकारों को चाहिए कि सभी बच्चों के लिए समावेशी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा 2030 प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा स्तर पर की गई अपनी प्रतिबद्धताओ पर अमल करे और ऑनलाइन शिक्षा की सफलता और गुणवत्ता में जो भारी अंतर है उनका समाधान किया जाये अन्यथा इससे बालकों के मानसिक स्वास्थ्य व उनकी भविष्य पर नकारत्मक प्रभाव पड़ेगा।

स्पेशल एजुकेटर तथा इंटरनेशनल वेलफेयर ट्रस्ट से जुड़े फरहत अली का कहना है कि विश्व में कोरोना वायरस की सर्वाधिक मार विकलांग लोगों पर पड़ी है जिनकी संख्या लगभग एक अरब है अधिकांश दिव्यांगजन पहले से ही गरीबी, हिंसा, उत्पीडन, उपेक्षा, जैसी असमनातों का सामना कर रहे थे, इस कोविड–19 महामारी ने इनकी समस्याओं को और भी बढ़ा दिया है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व में लगभग 15 प्रतिशत लोग दिव्यांग हैं इनमें से 54 प्रतिशत 60 वर्ष के नीचे है। इनके लिए काम कर रही संस्थाएं भी आर्थिक संकट से जूझ रही हैं। ऐसे में बच्चों की शिक्षा सम्बन्धी समस्याएं और भी बढ़ गयी है, विद्यालयों द्वारा ऑनलाइन क्लास प्रारम्भ कर देने के कारण अधिकांश दिव्यांग बालक सीमित संसाधनों तथा आर्थिक, तंगी के कारण इस सुविधा का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। इस महामारी के पूर्व भी दिव्यांग बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा का वातावरण तैयार कर पाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था वर्तमान में यह कार्य और भी दुष्कर हो गया है। इसलिए आवश्यकता है कि शारीरिक व मानसिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त संसाधन एकत्र किये जाएँ जिससे वह महामारी के कारण आई इस विषम परिस्थितियों में स्वयं को ढाल सकें।

निष्कर्ष–

इस प्रकार हम यह देख पा रहे हैं कि कोविड–19 महामारी के दौरान और उसके पश्चात् विद्यार्थियों के समग्र विकास में कई प्रकार की बाधाएं उत्पन्न हुई। जो बालक शारीरिक रूप से सक्षम हैं उनके साथ अलग समस्याएं जैसे कि– एकाग्रता का अभाव, अनुशासनहीनता, तनाव, अधिगम समस्या, समयाभाव आदि है और जो बालक किसी भी प्रकार से शारीरिक रूप से अक्षम है उनके साथ भिन्न प्रकार की समस्याएं जैसे– लम्बे समय तक स्क्रीन को देखते रहने से आँखों में परेशानी, थकान, देर तक एक ही स्थिति में बैठे रहने में समस्या, विशेष आवश्यकता वाले बालकों पर शिक्षकों द्वारा ध्यान केन्द्रित न कर पाना, ऑनलाइन मोड में अपने विषय सम्बन्धी समस्याओं को स्पष्ट न कर पाना आदि।

अतः बालक के सर्वांगींण विकास के लिए आवश्यक है कि बालक की वर्तमान समस्या पर ध्यान केन्द्रित करते हुए विद्यालयों को अलग पाठ्यक्रम, प्रशिक्षणयुक्त शिक्षक और विषयों को अधिक परिमार्जित करते हुए तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए उनके अनुसार उपयुक्त शिक्षण विधि का प्रयोग किया जाएं। तथा ऐसे डिजिटल प्लेटफार्म का प्रयोग किया जाये जो सर्वसुलभ हो।

शैक्षिक निहितार्थ–

महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा पर अत्यधिक निर्भरता से शिक्षा में आई असमानता को दूर करने के लिए सरकारी और निजी संस्थानों को मिलकर कार्य करना होगा। प्रत्येक स्तर की शिक्षा के लिए विशेष प्रकार के वेब प्लेटफार्म बनाने होगें कुछ निजी संस्थानों द्वारा बनाये भी गए हैं जैसे– बायिजूज (कक्षा–4 से 12 तक), वेदान्तू (कक्षा 6 से 12 तक), अनफोल्डयू (पूर्व–प्राथमिक से 12 तक) आदि। सरकार के द्वारा भी स्वंयम, ई–बस्ता व डिजिटल इंडिया जैसे अभियान प्रारम्भ किये गए। दिक्षा पोर्टल द्वारा विद्यालयी शिक्षा पर बल दिया गया है। कक्षा 1 से 12 तक छात्रों को "वन नेशन वन प्लेटफार्म" के तहत ई–कंटेंट और क्युआर कोड आधारित पुस्तकें मुहैया करायी जायेगीं। दिव्यांग बच्चो के लिए (DAISY) डिजिटल

ऐक्सेसिबल इनफार्मेशन सिस्टम के तहत ई–कंटेंट प्रोग्राम लाया गया, जिसके अन्तर्गत दिव्यांग विद्यार्थियों की जरूरतों को ध्यान में रखकर कोर्स प्रारम्भ किया गया।

अतः यह प्रयास किया जाना है कि उपर्युक्त सभी संसाधनों को व्यापक स्तर पर व्यावहारिक रूप प्रदान किया जाये जिसका उपयोग करके प्रत्येक विद्यार्थी अपनी शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा कर सके और साथ ही साथ शैक्षिक समस्याओं का निदान कर अपने व्यक्तित्व, अधिगम शैली व शैक्षिक उपलब्धियों को उत्तम बना सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

- ठाकुर, यतीन्द्र (2018). समावेशी शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
- कुमारी, लक्ष्मीना (2020). हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आईसीटी के प्रभाव का अध्ययन लघु–शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
- www.hindi-essay.com
- https://www.pragyata-hindi.com
- http://en.wikipedia.org/wiki/video-lesson
- http://www.academia.edu.
- http://www.bijanicollegs.org//lecture-method-techinic-method
- https://www.patrika.cm/specially-abled-students-unable-to-takeparticipateonlineclasses